शंकराचार्य और इस्लाम

डॉ. मकसूद आलम*

शंकर ने एकेश्वरवाद का प्रतिपादन किया है और इस्लाम आरम्भ से ही एक ईश्वर में विश्वास करता था। इतनी सी बात पर डॉक्टर ताराचन्द ने यह अनुमान निकाल लिया कि शंकर का उद्‌भव इस्लामी प्रभावों के कारण हुआ, क्योंकि शंकर केरल में जन्में थे और केरल में तब तक मुसलमान आ चुके थे। अर्थात् मुसलमान केरल में आए नहीं कि हिन्दुओं ने उनके पास एकेश्वरवाद को देखकर उसका अनुसरण करना प्रारम्भ कर दिया। ये नितान्त भ्रमपूर्ण बाते हैं। इस मत के विरूद्ध सबसे पहले तो यह अकाट्य तर्क है कि शंकर का एकेश्वरवाद भारतीय अद्वैतवाद का विकसित रूप है और उसका इस्लामी एकेश्वरवाद से कोई भी मेल नहीं है। इस्लाम एक ईश्वर को जरूर मानता है, किन्तु वह एकेश्वरवादी या अद्वैतवादी नहीं, केवल ईश्वरवादी है। इस्लाम ईश्वर को एक मानता है, किन्तु वह यह भी समझता है कि ईश्वर ने सृष्टि बनाई, वह सातवें आसमान पर बसता है एवं उसके हृदय में भक्तों के लिए प्रेम और दुष्टों के लिए घृणा का वास है। संसार असत्य है अथवा जो कुछ हम देखते हैं वह कुछ नहीं में कुछ का आभास है, ये बातें इस्लाम में न पहले थीं, न अब हैं। इस्लाम में इनका आभास मात्र सूफियों के जरिए आया था और वह भी नवीं–दसवीं सदी के बाद। यह भी स्मरण रखने की बात है कि स्वयं सूफियों को यह ज्ञान कुछ तो सीधे ब्राह्मणों से और कुछ नव–अफलातुनी मत से मिला था, और नव अफलातुनी मत के प्रवर्तक प्लॉटिनस ने उसे ब्राह्मणों और बौद्धों से प्राप्त किया था। इसके विपरीत शंकर का ब्रह्म, शुद्ध, बुद्ध, चैतन्य, निराकार, और निर्विकार हैं इसे भक्तों की चिन्ता नहीं, न दुष्टों को दंड देने की फिक्र है। शंकर के अनुसार सृष्टि ईश्वर ने नहीं बनाई। यह महत्व का विस्तार है। शंर ब्रह्म के सिवा और किसी का अस्तित्व नहीं मानते। शंकर मत शुद्ध अद्वैत मत है। किन्तु, इस्लाम शुद्ध या विशिष्ट, किसी भी प्रकार के अद्वैतवाद में विश्वास नहीं करता। उसका विश्वास सिर्फ ईश्वरवाद में है और सृष्टि के स्वभाव के विषय में भी कुरान शंकर के ठीक उलटा बोलता है। इस्लाम का ईश्वरवाद शंकर के अद्वैवताद से बिल्कुल भिन्न है। फिर भी न जाने किस कारण से डॉक्टर साहब को यह भ्रम हो गया कि शंकर मत इस्लाम की तौहीद का अनुकरण है।

शंकर को इस्लाम का अनुकर्ता कहकर डॉक्टर ताराचन्द ने केवल भ्रम का ही प्रचार नहीं किया प्रत्युत उन्होंने भारतीय संस्कृति से भी अपना अपरिचय व्यक्त किया है। शंकर भारतीय चिन्तनधारा में आकस्मिक घटना की तरह नहीं आए। इनकी परम्परा की लकीर उपनिशदों से आगे ऋग्वेद के नासदीय सूक्त तक पहुँचती है। नासदीय सूक्त ने जीवन और सृश्टि के विशय में जो मौलिक प्रश्न उठाए थे, उन्हीं के प्रश्नों का समाधान खोजते–खोजते पहले उपनिषद्, फिर बौद्ध दर्शन और सबके अन्त में शंकर का सिद्धान्त प्रकट हुआ। शंकर के निकटतम पूर्वज बौद्ध दार्शनिक थे, जिन्होंने शून्यवाद की स्थापना की थी, जो बौद्धों को शून्यवाद था और वही शंकर मत का मायावाद हुआ। बौद्धों से आगे बढ़कर शंकर ने एक तटस्थ ब्रह्म को अवश्य स्थान दिया। किन्तु तटस्थ ब्रह्म भी नया नहीं था, प्रत्युत वह उपनिषदों के युग से आ रहा था। शून्यवाद को मायावाद के नाम से अपनाने के कारण ही शंकर को प्रछन्न बौद्ध कहते थे। शंकर ने ब्रह्म की कल्पना जिस रूप में की थी, वह भक्तों के लिए निराशाजनक था, क्योंकि भक्तों की प्रार्थना सुनने को ब्रह्म के कान खुले हुए नहीं थे। इसीलिए शंकर मत के विरुद्ध, शंकर के बाद ही जोर की प्रतिक्रिया उठी और निम्बार्क, मध्व, रामानुज, वल्लभ ये सभी महात्व साकारवाद की ओर झुके, क्योंकि शंकर का निराकार मत से तार्किक पंडितों को ही समाधान मिलता था, बाकी जनता के पल्ले वह नहीं आ रहा था।

यह भी ध्यान देने की बात है कि यदि शंकराचार्य प्रच्छन्न बौद्ध थे तो उनके दादा गुरू गौड़पाद अथवा अद्वैताचार्य प्रत्यक्ष बौद्ध समझे जाते हैं। शंकर के गुरू गोविन्दाचार्य थे और गोविन्दाचार्य के गुरू गौड़पादाचार्य। गौड़पादाचार्य ने माण्डूक्योपनिषद पर जो कारिका लिखी है उसके चतुर्थ प्रकरण के आरम्भ में उन्होंनें बुद्ध की वन्दना इन शब्दों में की है –

ज्ञानेनाघ्काशकल्पेन धर्मान्यों गगनोपमान्,
ज्ञेयाभिन्नेन सम्बुद्धः तं वन्दे द्विपदां वरम्।

(ज्ञेय धर्मों से अभिन्न आकाश–कल्प ज्ञान से जिसने आकाश सदृश पदार्थों को जान लिया, उस द्विपद श्रेष्ठ सम्बुद्ध को मैं प्रणाम करता हूँ।)

क्या इन प्रमाणों के रहते हुए यह मानने का कोई आधार है कि शंकर का एकेश्वरवाद भारतीय परम्परा से भिन्न वस्तु थी और उसका आविर्भाव इसलिए हुआ कि शंकर ने मुसलमानों की संगति की थी? यह मानी हुई बात है कि इस्लाम, आरम्भ में, दर्शनमुक्त धर्म था। दार्शनिक बारीकियाँ उसमें सूफियों ने डालीं। जिन दिनों शंकर जन्में (788 ई0) उन दिनों तक इस्लाम शून्यवाद के ऊहापोह में पड़ा भी नहीं था। इसके विपरीत, शून्यवाद और मायावाद के विषय की विचिकित्सा भारतवर्ष में उपनिषदों के युग से होती आ रही थी और उसका ज्ञान यूनान को भी प्राप्त हो चुका था। सच बात तो यह है कि शंकर के विचारों पर दार्शनिक वसुबन्धु की पूरी छाप है। इसी कारण वे प्रछन्न बौद्ध कहलाते हैं; और चूँकी उन्होंने अपने

***ग्राम–जहानाबाद, थाना+अंचल–कुदरा, जिला–कैमूर, बिहार**

दर्शन में बौद्ध धर्म की मुख्य बातें अपना लीं, इसलिए बौद्ध दर्शन अनावश्यक–सा हो गया।

भारतीय दर्शन परिषद् के स्मारक–ग्रन्थ में लिखते हुए दर्शनाचार्य स्वर्गीय सुरेन्द्रनाथ दास ने बतलाया है कि ''नागार्जुन शून्यवादी थे। उन्होंने माना है कि संसार में किसी भी वस्तु की सत्ता नहीं है। सबकुछ नहीं में कुछ होने का भ्रम है। न तो कोई वस्तु उत्पन्न होती है, न विनष्ट। लंकावतार–सूत्र का दर्शन भी नागार्जुन का ही दर्शन है। यद्यपि वह विज्ञानवादी दर्शन है तथापि यह दर्शन भी मानता है कि हम जो कुछ देख रहे हैं, वह भी अपनी मानस–तरंग के कारण। वस्तुतः बाह्य जगत् से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि जगत् सत्य है ही नहीं। इसी विचार को मैत्रेय और असंग ने आगे बढ़ाया तथा वसुबन्धु (पंचम शताब्दी) ने उसका विस्तार किया। आगे चलकर शंकर ने उपनिशदों का जो वेदान्ती भाश्य किया, उसकी नींव वसुबन्धु के दर्शन में ही डाली जा चुकी थी।

शंकराचार्य का सबसे बड़ा महत्व यह है कि उन्होंने हिन्दुत्व को पौराणिक धर्म से मोड़कर उपनिशदों की ओर उन्मुख कर दिया। जैसे गीता ने बीसवीं सदी में आकर लोकमान्य तिलक के हाथों नवीनता प्राप्त की, वैसे ही शंकराचार्य के हाथों, उपनिषदों की शिक्षा नवीन हो गई। उन्होंने अपने सारे ग्रन्थ इस भाव से लिखा कि मनुष्य को ब्रह्म का सान्निध्य प्राप्त करने का मार्ग स्पष्ट दिखाई पड़े। उनका दूसरा महत्व यह भी है कि अद्वैत को प्रमुखता देते हुए भी उनहोंने विष्णु, शिव, शक्ति और सूर्य पर स्तोत्र लिखे, जिससे हिन्दूत्व में समन्वय लाने का उनका आग्रह प्रकट होता है। वे आध्यात्मिक सुधारक और सन्त थे एवं शाक्त मन्दिरों में बलि देने की प्रथा का उन्होंने अनेक स्थानों पर विरोध किया था। बौद्ध संघों के अनुकरण पर उन्होंने सन्यासियों के संघ स्थापित किए तथा भारत की भौगोलिक एकता को प्रत्यक्ष करने के निमित्त देश की चार दिशाओं में उन्होंने चार पीठ भी बसाए, जो बदरिकाश्रम, द्वारका, जगन्नाथपुरी और श्रृंगेरी में अवस्थित हैं तथा जहाँ जाने की धार्मिक अभिलाषा प्रत्येक हिन्दू के मन में रहती आई है।

संदर्भ

1. डॉ0 ताराचन्द, हिस्ट्री ऑफ दी फ्रीडम मूवमेंट
2. Glimpses of Medival Indian Culture
3. ऑवर हेरिटेज
4. गीता प्रेस प्रकाशित माण्डुक्योपनिषद
5. श्रीमद्भगवद्गीता
6. रेवरेंड एफ0 किटेल, कन्नड़–इंग्लिश–डिक्शनरी
7. द पर्शियन मिस्टिक्स

विवेकानन्द : एक कर्मयोगी

डॉ. पूनम चौधरी*

स्वामी विवेकानंद जी महाराज के अनुसार – ''उठो, जागो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य ना प्राप्त हो जाये।''

स्वामी विवेकानंद का जन्म कलकत्ता के सिमला मोहल्ले के प्रसिद्ध दत्त परिवार में हुआ। उनके पितामह दुर्गाचरण दत्त थे। वे फारसी, संस्कृत भाषा के अच्छे जानकार थे। उन्हें कानून में भी काफी रुचि थी। ये भी 25 वर्ष की आयु में, अपने पुत्र विश्वनाथ के जन्म के बाद, घर का त्याग कर सन्यास ले लिया।

नरेन्द्रनाथ दत के पिता श्री विश्वनाथ दत्त अंग्रेजी, फारसी भाषा की अच्छी जानकारी रखते थे। बाइबल के अध्ययन में उनकी बड़ी रुचि थी। वे पेशे से वकील थे। कलकत्ता में ही नरेन्द्रनाथ को संगीत की शिक्षा दी गई। इनकी माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। ये एक धर्म–परायण गृहणी थी। नरेन्द्रनाथ का परिवार कुलीन, विख्यात, उदारता और विठता के लिए विख्यात था।

नरेन्द्रनाथ का जन्म 12 जनवरी 1863 ई0 को हुआ था। के बलिष्ठ देह, प्रखर बुद्धि एवं योगी–स्वभाव के बालक थे। उन्होनें गणित, इतिहास एवं दर्शनशास्त्र में स्नातक होने के बाद विधि–शास्त्र का अध्ययन किया।

18 वर्ष की आयु में महाविद्याल में अध्ययन करते समय वे श्री रामकृष्ण से मिले। अपने गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस के प्रेमपूर्ण मार्गदर्शन ने वे आध्यात्म राज्य के गूढ़ तत्वों से अवगत हुए।

श्री रामकृष्ण परमहंस की महा–समाधि के बाद स्वामी विवेकानंद के नेतृत्व में उनके 14 युवा शिष्यों ने सन्यासियों का एक संघ बनाया (दो शिष्य बाद में आये), जिसे रामकृष्ण मठ (संघ) के नाम से जाना गया।

उन 16 शिष्यों के नाम है – 1. विवेकानंद, 2. ब्रहानंद, 3. योगानंद, 4. निरंजनानंद, 5. शिवानंद, 6. सारदानंद, 7. रामकृष्णानंद 8. अभेदानंद 12. त्रिगुणतीतानंद, 13. सुबोधानंद, 14. अखण्डानंद, 15. लिनानंद, 16. प्रेमानंद।

स्वामी विवेकानंद ने हिंदू सन्यास परम्परा को पुनर्गठित कर उसे आधुनिकता प्रदान की। स्वामी जी ने भारत का भ्रमण करना शुरु किया यहाँ उन्होनें असंक्ष्य दीनहीन भारतीयों की भयानक दरिद्रता एवं पिछड़ेपन को देखकर वे अत्यंत दुखी हुए, किंतु साथ ही उन्होने यह भी देखा कि दरिद्रता के उपरांत भी लोगों में धर्म के प्रति प्रेम और आस्था है तथा उनके जीवन में प्राचीन आध्यात्मिक संस्कृति

***सादपुरा, मिल्कीटोला, मुजफ्फरपुर**